ई-सिगरेट कैंसर पैदा कर सकती हैं

अमेरिकन एसोसिएशन फॉर कैंसर रिसर्च की सालाना मीटिंग 6 अप्रैल को कैलिफोर्निया में हुई थी। इस मीटिंग में शोधकर्ताओं ने बताया कि उन्होंने मनुष्यों की श्वसन कोशिका में हो रहे म्यूटेशन का अध्ययन किया। ये म्यूटेशन्स ऐसे धूम्रपानी व्यक्तियों में पाए जाते हैं जिन्हें फेफड़ों के कैंसर का खतरा होता है। इन कोशिकाओं को ऐसे कल्चर माध्यम में पनपाया गया था जिसमें इलेक्ट्रॉनिक (ई) सिगरेट से निकली वाष्प मिली थी। इन कोशिकाओं के जीन्स की अभिव्यक्ति की तस्वीर बनाई गई।

शोधकर्ताओं ने पाया कि जब कोशिकाओं को ई-सिगरेट की वाष्प घुले माध्यम में पनपाया गया तो जीन्स का व्यवहार वैसा ही रहा जैसा तंबाकू के धुएं में पनपती कोशिकाओं में होता है। इस अध्ययन के शोधकर्ता बोस्टन युनिवर्सिटी के जीनोमिक्स और फेफड़ों के कैंसर पर काम कर रहे एवरम स्पायरा का कहना है कि दोनों का पैटर्न हूबहू एक जैसा तो नहीं है लेकिन इनमें कुछ गौरतलब समानताएं हैं। उनकी टीम अब यह देखने की कोशिश कर रही है कि क्या कोशिका के व्यवहार में यह परिवर्तन उन्हें कैंसर कोशिका का रूप दे रहा है।

शोध कार्य अभी प्रारंभिक चरण में है। इसके आधार पर यह नहीं कहा जा सकता कि ई-सिगरेट शरीर में तो क्या, परखनली में भी कैंसर पैदा कर सकती है। हो सकता है कि ये तंबाकू से ज़्यादा सुरक्षित हों लेकिन हाल के अध्ययन से लगता है कि ये शरीर के हित में तो कदापि नहीं हैं।

ई-सिगरेट विवादास्पद रही हैं। इनमें तंबाकू को जलाने की बजाय तरल निकोटिन को वाष्प में बदला जाता है। इसलिए कुछ शोधकर्ताओं को लगता है कि ई-सिगरेट धूम्रपान की वजह से स्वास्थ्य पर होने वाली क्षति को कम करती है। अन्य लोगों का मत है कि ई-सिगरेट मात्र धूम्रपान को नया रूप दे रही हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***